पठनीय

पुस्तक का नाम	*'मैं इस तरह नहीं पढ़ूँगी'*
लेखक	रमेश दवे
प्रकाशक	ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, बी-7, सरस्वती कॉम्प्लेक्स सुभाष चौक, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110 092

कनक लता दुबे

'मैं इस तरह नहीं पढ़ूँगी' यह पुस्तक अपने शीर्षक से ही पाठकों के अंदर जिज्ञासा उत्पन्न करती है। क्या और क्यों नहीं? पढ़ने का प्रश्न दिमाग में उत्पन्न होता है। पुस्तक का आवरण पृष्ठ इस जिज्ञासा का समाधान स्वयं कर देता है। हाँ, प्रारंभ में लेखक द्वारा वर्णित इस पुस्तक की जिज्ञासु छात्रा बड़ी सयानी-सी लगती है, जिसके प्रश्न कभी-कभी तो पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक स्तर के बच्चे वाले लगते हैं, परंतु जैसे-जैसे हम पुस्तक पढ़ने लगते हैं। यही प्रश्न बहुत सूझ-बूझ वाली पढ़ी-लिखी बड़ी आयु की बालिका के प्रश्न लगते हैं।

संपूर्ण पुस्तक 39 छोटे-छोटे अध्यायों में लिखी गयी हैं। सभी शीर्षक पढ़ने की किसी समस्या से शुरू होकर समस्या का समाधान प्रस्तुत करते है। लेखक स्वयं शिक्षक एवं शिक्षाविद् हैं तथा मध्यप्रदेश और देश-विदेश के कुछ स्कूलों में, वहाँ के शिक्षकों एवं स्कूलों की स्थिति से पूर्णतया परिचित हैं। उन्होंने इन स्कूलों में जो कुछ भी देखा, सुना

*प्रवाचक, जगत तारण गर्ल्स डिग्री कॉलेज, इलाहबाद।

और अनुभव किया, उसे अपने शब्दों में सुधारात्मक प्रयास के रूप में प्रस्तुत किया है।

'मैं कौन हूँ,' शीर्षक के अंतर्गत लेखक ने किसी बच्चे के स्कूल जाने के पूर्व की जिज्ञासाओं को व्यक्त करते हुए स्कूलों के स्वरुप को बताया है। वर्तमान में बच्चों के लिए सरकारी स्कूल से उपलब्ध होने वाली सहायताओं जैसे–फ़ीस, बस्ता, ड्रेस, किताबों का मुफ़्त मिलना, दोपहर का भोजन आदि के विषय में बताया है।

'मैं वही हूँ जो आप सोचते हैं', इसमें लेखक ने घर से स्कूल आने वाली लड़कियों के भीतर के डर को उजागर किया है। स्कूल में औपचारिक रूप से नाम पूछना, स्कूल की घंटी बजना, प्रार्थना करना और हाज़िरी लेने के खौंफ़ को व्यक्त कर उसको दूर किए जाने का समाधान भी दिया है।

'मैं इस तरह नहीं पढ़ूँगी' इसमें कक्षा में आते ही बच्चों को अ, आ, इ, ई का ज्ञान न कराके उन्हें खेल-खेल में अक्षर और अंकों का ज्ञान कराने की बात की गई हैं, साथ ही लंबी पट्टी वाले ब्लैकबोर्ड पर अक्षर, संख्या, जानवर, पक्षी, घर, पेड़-पौधे आदि सबकी जानकारी देने की बात की गई है।

'काली पट्टी के अंदर क्या?' इसमें समाज की सहायता, सरकारी स्कूलों द्वारा स्कूल के आस-पास की सफ़ाई, दीवारों की पुताई, दीवारों पर चित्र, उनमें खिलौने, कहानी, कविता, गीत, गणित की पहेलियाँ आदि को उकेरने के लिए दीवार पर काली पट्टी भी बनाने का वर्णन है।

'ज़ेबों में चलता स्कूल' इसमें स्कूल के लिए भवन का अभाव होने पर छोटी-सी दो मीटर लंबी और दो मीटर सफेद कपड़े की दीवार बनाने की बात की गई है उसे दो डंडे के सहारे टाँगने और उसमें सौ जेबे बनाने को कहा गया हैं इनमें कई प्रकार के कार्ड जैसे–चित्र, नाम, अक्षर, शब्द, वाक्य, गिनती, जोड़ना, घटाना, गुणा, भाग के चिह्न, गणित एवं भाषा के खेलों के कार्ड रखकर इनके माध्यम से खेल-खेल में सीखने का उपाय बताया गया है।

'बिग बी क्या है?' इसमें बिग बी, का तात्पर्य बिग बुक या बड़ी किताब से है। इन किताबों में बच्चों के लिए बड़े-बड़े चित्र, बड़े-बड़े अक्षरों की बात की गई हैं जिनसे बच्चे बहुत कुछ सीखते हैं। साथ ही इनमें उनके आनंद के लिए तस्वीरें भी हैं।

'सब जगह स्कूल ही स्कूल' इसमें बच्चों के भौतिक विचारों को पोस्टरों द्वारा अभिव्यक्ति दी गई है। कहीं पेड़ के पोस्टर है, तो कहीं घड़े के, कहीं सिपाही के है तो कहीं मछलियों और जानवरों के। दूसरो के द्वारा बनाए गए पोस्टरों में कौन-से विषय छूट गए हैं इस पर बच्चों की अद्‌भुत सूझ-बूझ को दर्शाया गया है।

'सोचने का यह कैसा स्कूल' बच्चों में सोचने की आदत के विकास के तरीके सुझाता है। पृथ्वी, फूलों, फलों, महिला, एक्टर आदि के उदाहरण से विषय को स्पष्ट किया गया है। सोचने की आज़ादी से बच्चों में काम करने और आचरण करने की इच्छा का वर्णन किया गया है। मन में सही सोच होने से कभी भी गलत निर्णय नहीं होगा।

'क्या बच्चे बना सकते हैं अपना पाठ्यक्रम?' इसमें बच्चों द्वारा पाठ्यक्रम बनाने के बारे में बताया गया हैं। अवसर मिलने पर बड़ा तर्कपूर्ण पाठ्यक्रम बनाया–पहले खेल फिर प्रेम, मदद समाज, समूह आदि और इसमें गीत, कविता, कहानी, नाटक, जादू की पहेली को भी शामिल किया।

'किताबी कीड़ा या किताबी क्रीड़ा?' इसमें बताया गया है कि बच्चे किताबों से क्रीड़ा करते हैं। छोटा बच्चा जिसे अक्षर ज्ञान नहीं, किताब को पकड़ना भी नहीं जानता, वह कैसे दूसरों से सुनकर, देखकर पढ़ता है मॉटेंसरी के प्रयोग द्वारा यह सिद्ध किया गया है कि बच्चा खेल द्वारा ही आकर्षित होता है। उसे न कहानी, न संगीत और न ही टॉफी आकर्षित करती है बल्कि खेल से ही वह सब कुछ सीखता है।

'कैसी होगी बच्चों की किताब' इसमें बच्चों की दुनिया को कल्पनाओं, सपनों और जिज्ञासाओं की दुनिया बताया गया है। वह खेल-खेल में ही सब सीखता है। अतः बच्चों को क्या अच्छा लगता है, क्या नहीं? उनकी किताब बनाते समय इसका ध्यान रखना आवश्यक है। उन्हें एक ही किताब में सारे विषय भाषा, गणित, पर्यावरण आदि का ज्ञान कराने की बात की गई हैं।

'किताब क्या हैं?' इनमें बताया गया है कि किताब स्कूल का एक अंग है जैसे शिक्षक और पाठ्यक्रम स्कूल का अंग होते है। ऐसे ही किताबों में बच्चों के आस-पास के विषय का वर्णन कर, विषय को सुगमता से समझाने की बात की गई है।

'किताबें क्या सिखाती हैं?' किताबें हमारी सबसे अच्छी दोस्त हैं उनको पढ़कर ही हमें ज्ञान प्राप्त होता है। इससे हम कर्म और इंसानियत का रिस्ता कायम करते हैं। इसमें कई रंग, कई चित्र और कई खेल हैं और कई अच्छी-अच्छी बातें है।

'पुस्तकों का खजाना–बच्चों का पुस्तकालय' ज्ञान का साधन किताबें हैं। ज्ञान की पूजा किताबें हैं। वो किताबें ही हैं जो हमें अन्याय, शोषण एवं गुलामी से मुक्ति का रास्ता दिखाती हैं। किताबें खेल भी हैं और खिलौना भी। बच्चे खुद पुस्तकालय बना सकते हैं। वे डोरियाँ बाँधकर कुछ पतली और छोटी किताबें लटका सकते है। बड़ी किताबों के लिए पॉकेट बोर्ड बना सकते हैं। बच्चों के पुस्तकालय हेतु समाज का सहयोग भी लिया जा सकता हैं

'मेरा पुस्तकालय मेरे मन का' इसमें पहले स्कूल या घर में बच्चों के पुस्तकालय या पुस्तकों के रखने की चर्चा के साथ बच्चों की रुचि की किताबों की सूची जैसे–प्यार की, हिलमिल कर खेलने की, बहती नदी, उफनता समुद्र, तैरते बादल, चमकते चाँद-सितारे आदि की किताबें। इन किताबों को बच्चों द्वारा स्कूल में रखने एवं उसे पढ़ने की विधि पर प्रकाश डाला गया है।

'क्या हमें किताब पढ़ना नहीं आता?' इसमें बच्चों को बोल कर, मौन होकर, समझ कर, ध्यान से पढ़ने की प्रक्रिया का ज्ञान कराया गया है। साथ ही समूह में पढ़ने की प्रतियोगिता आदि के द्वारा पढ़ने एवं समझने की विधि बताई गई है।

'क्या हम बच्चे नहीं बना सकते किताब?' इसमें बच्चों में किताब बनने की जिज्ञासा जैसे–नाटक की किताब, गीत की किताब, कहानी की किताब आदि का वर्णन करते हुए उनके द्वारा विभिन्न विषयों पर स्वयं लिखने का उल्लेख किया गया हैं।

'बच्चे भी बन सकते हैं लेखक' बच्चों को उनके मन के अनुसार लिखने की प्रेरणा दी गई है, साथ ही बच्चों और शिक्षकों द्वारा, लिखे गए कुछ विषयों का वर्णन कर, प्रत्येक बच्चे में लिखने की शक्ति का वर्णन किया गया है। इसी प्रकार लिखने वाले बच्चे लेखक बनते हैं।

'क्या किताबों से भी खेला जा सकता है।?' भाषा, गणित, विज्ञान, पर्यावरण आदि सभी किताबों से खेल-खेला जा सकता है। भाषा के मुख्य चार कौशल है–सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। इन्हें हम खेल के द्वारा विकसित कर सकते है। इसमें गणित में आर्यभट्ट, भास्कर एवं रामानुजम के गणितीय खेलों का उल्लेख किया गया हैं साथ ही विज्ञान एवं पर्यावरणीय खेलों का भी वर्णन हैं।

'क्या एक इंजीनियर बच्चों का खिलौना गुरू हो सकता है' इसमें बताया गया है कि घर के विभिन्न कबाड़ों द्वारा बच्चे अपनी कल्पनाशीलता से कैसे बहुत सारे खिलौने बना सकते हैं। 'कबाड़ से जुगाड़' में फेंकी गई वस्तुओं से बनाए गए खिलौनों आदि का उल्लेख है।

'क्या भाषा सीखने से सब कुछ सीख जाते हैं' इसमें भाषा को मनुष्य की पहचान बताया गया है। इससे ही हम सोचते-विचारते, बोलते एवं लिखते हैं। मनुष्य के अतिरिक्त कुछ अन्य प्राणी भी बोलते हैं। परंतु मनुष्य का भाषा ज्ञान बहुत बड़ा है।

'भाषा सीखना, सिखाना और कुछ तरकीबें' के अंतर्गत भाषा सीखने के चार साधन बड़े ही मनोरंजक तरह से बताए गए हैं–सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना।

'पिटते बच्चे और मिटते स्कूल' इसके अंतर्गत कुछ बच्चों के उदाहरण द्वारा उनके स्कूल में मारे जाने एवं भय की बात कही गई है। स्कूल जब बच्चों को पीटने आदि की वीभत्स क्रिया करेंगे तो क्या स्कूल बच पाएँगे? इस शंका को व्यक्त किया गया है।

'स्कूल में डर की व्यवस्था क्यों?' इसमें पढ़ाई के डर के साथ ही स्कूली व्यवस्था द्वारा रचे गए, कई प्रकार के डरों की चर्चा की गई है। शिक्षकों को किस-किस का डर है और उससे शिक्षा कैसे सफल हो पाएगी? इस पर एक बड़ा प्रश्न चिन्ह है।

'समान स्कूल से क्या मतलब' इसमें 1964 में भारत सरकार द्वारा गठित शिक्षा आयोग कोठारी कमीशन से लेकर वर्तमान तक की विभिन्न शिक्षा नीतियों का उल्लेख करते हुए 'समान स्कूल' की व्यवस्था की असमानता को व्यक्त किया गया है।

'शिक्षक कौन और वह कैसे बनता है?' के अंतर्गत समाज में विभिन्न लोगों एवं उनके व्यवसाय का वर्णन करते हुए शिक्षक की चर्चा की गई है। यद्यपि समाज में सीखने के अनेक

माध्यम हैं फिर भी शिक्षक की अपनी अहम भूमिका हैं, यही इस अध्याय का विषय है।

'अध्यापक का प्रशिक्षण क्यों और कैसे?' अध्याय में आवश्यकता अनुभव की गयी है कि अध्यापकों का प्रशिक्षण ज़रूरी है। इससे उनके अंदर विद्यमान ज्ञान को और अधिक उन्नयन कर बच्चों में संप्रेषित किया जा सकता है।

'शिक्षक को हमने क्या दिया और उससे क्या लिया?' इसमें मध्यप्रदेश की शिक्षा, प्रयोगों और नवाचारों का उल्लेख करते हुए लेखक ने सरकार द्वारा शिक्षक को आज नौकरी और शिक्षक द्वारा अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह कैसे किया इसका वर्णन किया गया है।

'शिक्षक मूर्ति नहीं मूर्तिकार है' इसमें शिक्षक को मात्र मूर्ति न बनकर मूर्तिकार बनने के लिए स्वयं विचार करने को कहा गया है।

'हमें प्रशिक्षण तो चाहिए मगर कैसा' इसमें वर्तमान प्रशिक्षण प्रणाली पर प्रहार करते हुए शिक्षकों की योग्यता और कुशलता को बढ़ाने, पुराने ज्ञान को नए ज्ञान से जोड़ने, शिक्षा के नए तरीके खोजने एवं अभ्यास आदि को व्यक्त किया गया है।

'शिक्षा से न प्रौढ़ नागरिक बने और न नागरिक प्रौढ़' इसमें प्रौढ़ शिक्षा, साक्षरता अभियान सर्वशिक्षा क्या है? इसपर विचार व्यक्त किया गया हैं साथ ही, यह अपेक्षा की गई है कि शिक्षा से जो नागरिक बने वह प्रौढ़ हों।

'समाज, सरकार और स्कूल' इसमें आज़ादी से पूर्व और पश्चात् के समाज, आज़ादी के बाद गठित सरकार और आज की सरकार तथा स्कूलों के स्वरुप को दर्शाया गया है। वर्तमान में न तो समाज ठीक है, न सरकार। तो स्कूल कैसे ठीक हो सकते है?

'बच्चों से राजनीति क्यों?' आज समाज के हर क्षेत्र में राजनीति हो रही है। राजनीतिक के इस रूप से बच्चों दूर करवाना ही इस अध्याय का उद्देश्य है। सरकारी स्कूलों के साथ तीन किस्म की राजनीति होती है।

1. लोग हमेशा गरीब और गुलाम बने रहे।
2. अभावों में जीना सीखें।
3. पिटना सीख जाए।

'हम किन्हें पढ़ाते हैं' इसमें शिक्षक किसे पढ़ाते हैं बच्चों या पाठ को? वस्तुतः शिक्षक पाठ्यक्रम को पढ़ाता है। जबकि उसे बच्चों को आनंद, जिज्ञासा, खोज, प्रयोग, साझेदारी, सोच-विचार आदि के माध्यम से ज्ञान देना चाहिए।

'स्कूल पंचायतें क्यों नही?' इसमें पंचायतों के महत्व को प्रतिपादित किया गया है इसके द्वारा शिक्षा की इज्ज़त होती और शिक्षक भी महत्वपूर्ण होता है।

'मेरी खुशी का स्कूल, मेरे खौफ़ का स्कूल' इसमें मध्यप्रदेश में खौफ़ के स्कूलों को खुशी और आनंद से भर देने का वर्णन है 'शिक्षक समाख्या' कार्यक्रम के माध्यम से बच्चों की शैक्षिक उपलब्धता का वर्णन किया गया है।

'सवालों के संसार की सैर' इसमें शिक्षक में सवालों या प्रश्न के महत्व पर प्रकाश डाला

गया है। यदि किसी में प्रश्न करने की क्षमता होगी। तभी विषय स्पष्ट होगा। इसको इटली के बारबियाना के बच्चों के प्रश्न, सुकरात द्वारा ग्रीस के लोगों से प्रश्नोत्तर, महाभारत में युधिष्ठिर को यक्ष द्वारा किए गए प्रश्नों के महत्त्व से स्पष्ट किया गया है।

'स्कूल से डरना मत' इसमें स्कूल से अनुशासन, मुक्ति, ज्ञान, उपाधि, समाजीकरण या संस्कृतिकरण की जटिलता को दूर कर उसे सहज और आनंददायक बना कर बच्चों के मन से स्कूल के डर को दूर करने की बात की गई है।

'मैं हूँ स्कूल, मेरा दर्द न जाने कोई' इसमें स्कूल की आत्मकथा के द्वारा स्कूल की दशा का वर्णन करते हुए स्कूलों के छूट जाने का आग्रह किया है।

यह संपूर्ण पुस्तक स्कूलों में बच्चों के पठन-पाठन, देख-रेख, शिक्षक-प्रशिक्षण, प्रौढ शिक्षा, समाज, सरकार और स्कूल को अत्यंत सुलझे विचारों द्वारा वर्णित करती है और अनेकानेक सुधारात्मक प्रयासों के प्रति हमें जागरुक करती हैं। अतः यह पुस्तक एक स्वाभाविक जागरूकता उत्पन्न करने का अनुपम स्रोत है।